ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक-8 | जुलाई-II-2018 | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 10.00

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर...

लाल किले पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा योग का विशाल संगठन

★ 'योग' भारत का विश्व को अमूल्य उपहार - डर्क सेगार

★ रोगमुक्त और स्वस्थ जीवन के लिए योग आवश्यक - सुदर्शन भगत

नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयुष मंत्रालय एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में लाल किला मैदान में संगठित रूप से योग का सफल आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों व आयुष मंत्रालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों तथा अर्द्धसैनिक बल की 2000 महिला कर्मियों के साथ-साथ पचास हज़ार लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर देहरादून में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दिये गये उद्बोधन का सीधा प्रसारण किया गया जिसको यहां उपस्थित जनसमूह ने सुना एवं इसका लाभ लिया।

योग कार्यक्रम में **जनजातीय मामलों के राज्यमंत्री सुदर्शन भगत** ने कहा कि जिस प्रकार शरीर को एनर्जी देने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, ठीक उसी तरह से ही मन को भी एनर्जी देने के लिए योग की अति आवश्यकता है। जिससे तन भी और मन भी दोनों स्वस्थ रहेंगे। **संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र के निदेशक डर्क सेगार** ने कहा कि योग विश्व को एक अमूल्य उपहार के रूप में प्राप्त है। जिसने पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांधा है। उन्होंने कहा कि योग की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिकता समायी है, जिससे यह तन, मन और आत्मा तीनों को समग्र रूप से स्वस्थ बनाता है। योग किसी एक धर्म, जाति, वर्ग के लिए नहीं, बल्कि विश्व के समस्त मनुष्य के लिए है। उन्होंने कहा कि विश्व में भौतिकवाद, घृणा बढ़ती जा रही है और हम प्रकृति से, अन्य लोगों से और साथ ही स्वयं से भी कटते जा रहे हैं। यह राजयोग ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो हमें आपस में एक दूसरे से जोड़े रखेगा। **ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य वक्ता ब्र.कु. बृजमोहन** ने कहा कि यह अवसर योग शक्ति के अभ्यास को बढ़ाकर शान्ति और शक्ति के वायब्रेशन्स फैलाने का है। जिससे लोगों के मन में अस्वच्छता, वातावरण में जो अपवित्रता आ गयी है, उसे योग बल से समाप्त किया जा सके। **ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा** ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि परमात्मा द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग से ही हम अपने तन और मन को स्वस्थ; मन, बुद्धि, कर्म को सन्तुलित एवं समन्वयी बना सकते हैं, तथा मन को एकाग्र, असम्भव को सम्भव कर प्रकृतिजीत, कर्मेन्द्रियजीत व जगतजीत बन सकते हैं। जिसका जीता जागता उदाहरण हैं 102वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी। इस योग के कार्यक्रम में यहूदी समाज के ई.आई. मालेकर, बहाई धर्म के नेशनल ट्रस्टी डॉ. ए.के. मर्चेन्ट, बौद्धी धर्म के लामा लोबजंग, मुस्लिम धर्म के फिरोज़ अहमद बख्त ने भी भाग लिया एवं अपने विचार रखे।

"सर्व प्राप्तियों का आधार है राजयोग"

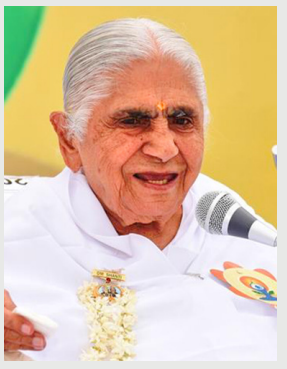

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी **जानकी** ने कहा कि सर्व प्राप्तियों का आधार है राजयोग। योग माना हम आत्माओं का परमात्मा से कनेक्शन, सम्बन्ध जोड़ना और जब हम परमात्मा से सर्व सम्बन्ध जोड़ते हैं तो हमारे में परमात्मा के गुण सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द, पवित्रता, दया और शक्तियां स्वत: आ जाती हैं। हमें ज्ञान रूपी लाइट मिलती है और हम लाइट अर्थात् हल्के हो जाते हैं।

मंच पर राजयोगिनी दादी जानकी एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई बहनों के साथ राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से सारे विश्व में शांति एवं पवित्रता के प्रकम्पन फैलाते हुए ब्र.कु. बहनें एवं भाई। सभा में विशाल संख्या में योगाभ्यास करते हुए शहर के भाई बहनें।

राजनीति में आध्यात्मिकता के समावेश से ही होगी सच्ची सेवा

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के राजनीतिक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर **महाराष्ट्र के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष अरुण गुजराती** ने कहा कि बिना आध्यात्मिकता के राजनीति के क्षेत्र में जनता की सेवा करना कठिन है। आध्यात्मिकता द्वारा ही हर जाति, धर्म के भेदभाव को समाप्त कर, नि:स्वार्थ भाव से सेवा की जा सकती है। उन्होंने कहा कि अगर हम खुद की तुलना दूसरों से करते हैं तो दु:ख की प्राप्ति के अलावा और कुछ भी नहीं होता है। इसीलिए दूसरों से तुलना करने के बजाए हमें अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाकर जीवन में दैवी गुणों को धारण कर, अंहकार को समाप्त कर जीवन को खुशी से जीना है।

झारखण्ड की पूर्व सांसद आभा महतो ने कहा कि जब तक देश के नेता अपने जीवन को आध्यात्मिकता से नहीं जोडेंगे, तब तक समाज में जो गरीब व अमीर की गहरी खाई है उसको समाप्त नहीं कर सकते, इसको समाप्त करने के लिए हर मानव के मन में आध्यात्मिकता के बीज बोने अति आवश्यक हैं।

संगठन के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि आत्म-अनुभूति करने के बाद ही परमात्मा से संबंध जोड़ा जा सकता है। जिसके लिए निरंतर राजयोग का अभ्यास अति आवश्यक है। **नेपाल के पूर्व मंत्री बाल बहादुर महत** ने कहा कि राजनीति में आध्यात्मिकता का समावेश करना समय और परिस्थितियों की बलवती मांग है। समाज में बंटवारा करने की बढ़ती प्रवृत्ति पर अध्यात्म के ज़रिए रोक लगाई जा सकती है। **प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. बृजमोहन** ने कहा कि भागती, दौड़ती ज़िंदगी में खुश रहना मानव के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आध्यात्मिकता से जुड़ने पर मन में श्रेष्ठ विचारों के बीज स्वत:पैदा होते हैं। शुद्ध विचार आत्मा के लिए शक्तिशाली खुराक है। हमें किसी भी व्यक्ति के अवगुणों को अपने चित्त पर नहीं रखना चाहिए।

पूर्व विधायक ब्र.कु. गंगाराम ने अपने जीवन के अनुभव सांझा करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता के माध्यम से मैंने स्वयं के जीवन में सकारात्मक बदलाव करने की प्रक्रिया को सहज रूप से अपनाया है। जिसके मुझे संतोषजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। जिससे सही रूप से समाज की सेवा करने में मुझे अथाह खुशी मिलती है। प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. उषा तथा क्षेत्रिय संयोजिका ब्र.कु. सपना ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

ब्र.कु. निर्वैर के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए अरुण गुजराती, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. उषा व अन्य।